The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अरुण कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एम.एड. विभाग
दयानंद बछरावां पी.जी. कॉलेज, बछरावां, रायबरेली, उ.प्र.

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
उच्च प्राथमिक स्तर , ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी, लोकतांत्रिक मूल्य।

DOI:
10.5281/zenodo.14101219

ABSTRACT

भारत की विभिन्न संस्कृतियाँ, एकता और अखण्डता इसकी सब से बड़ी विशेषता है जो इसे वैश्विक पटल पर एक अद्वितीय राष्ट्र के रूप में स्थापित करती है। यह एक लोकतान्त्रिक देश है और यहाँ का लोकतंत्र इसके समस्त नागरिकों के मौलिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके साथ ही वर्तमान में निरन्तर बढ़ते लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास के कारण भारत को हिंसा, शोषण, अराजकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि अनेक समाज व राष्ट्र विरोधी समस्याओं से जूझना पड रहा है। इनमें सुधार के एक प्रयास के रूप में प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण किया गया है। शोध हेतु चयनित समस्या का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके लिए शोध की प्रमुख परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है, बनाई गई। शोध समस्या की प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक शोध विधि की सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के रायबरेली जनपद के 4 विद्यालयों (2 ग्रामीण व 2 शहरी) का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया गया, जिनमें अध्ययनरत कुल 80 विद्यार्थियों (40 ग्रामीण- 20 छात्र व 20 छात्राओं एवं 40 शहरी- 20 छात्र व 20 छात्राओं) को सम्मिलित किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, टी-अनुपात आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया। इस शोध में

परिणाम के रूप में यह प्राप्त हुआ कि उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई अन्तर नहीं है। फलस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरीं विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों मे पर्याप्त समानता है। इनमें परिवेश एवं लैंगिक आधारों पर कोई भिन्नता नहीं पायी जाती है तथा वे इसके प्रति काफी हद तक जागरूक हैं। इसके साथ ही ये लोकतांत्रिक मूल्य उनके जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित भी करते हैं।

प्रस्तावना - भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचार को आधार मानते हुए समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में स्वीकार करती है। समाज में एक-दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान मूल्यों का है। स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, समानता, एकता आदि वे लोकतांत्रिक मूल्य हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाया जा सकता है। अनेक सामाजिक विकृतियों से दूषित होने के कारण बंधुत्व, उदारता, समानता, न्याय आदि मूल्य अब केवल शब्द मात्र ही रह गये हैं। चारों ओर लोकतांत्रिक मूल्यों में निरन्तर ह्रास होता दिखलाई पड़ रहा है। फलस्वरूप छात्रों की चिन्तन शैली व जीवन स्तर भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। विद्यार्थी भविष्य की नींव होते हैं। आज हम उनमें जो समझ विकसित करेंगे, वही उनके भविष्य निर्धारण में मदद करेंगे। अतः हमारा पहला प्रयास विद्यालय स्तर पर ही विद्यार्थियों की लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति समझ को जानने तथा उसे विकसित करने की ओर होना चाहिये। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी अपेक्षाकृत कम परिपक्व लेकिन अधिक जिज्ञासु होते हैं। यदि इस स्तर पर उनमें लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जाए तो वे भावी जीवन में एक उत्तम नागरिक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे। इन्हीं पक्षों को ध्यान में रखते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों से सम्बन्धित इस विषय पर शोध कार्य किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व - वर्तमान युग मशीनी युग है। इसमें मनुष्य भी मशीन ही बनता जा रहा है। मनुष्य के अन्दर जो मूल्य और भावनाएँ विकसित होनी चाहिये उनमें निरंतर ह्रास होता जा रहा है। मूल्य वे हैं, जो व्यक्ति को आदर्शों, मानकों और विश्वास के द्वारा उचित जीवन यापन में सहायता करते हैं। आज समाज अनेकों बुराइयों, अपराधों, कुकृत्यों, अत्याचारों आदि समस्याओं से जूझ रहा है और इसका एक कारण लोगों में लोकतांत्रिक मूल्यों की अनभिज्ञता भी है। विद्यार्थी समाज के भविष्य हैं और एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए उनमें लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम प्रारम्भ से ही उनमें यह समझ विकसित करेंगे तो पूरी सम्भावना है कि

भविष्य में आने वाली बहुत सी सामजिक समस्याओं पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकेगा। इन्हीं विभिन्न बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन - "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य -

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें -

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -

1.**कुमार, मनीष (2004)** ने **'उज्बेकिस्तान में लोकतंत्र एवं मानवाधिकार'** के अध्ययन में पाया कि उज्बेकिस्तान में मानवाधिकार का उल्लंघन व्यापक स्तर पर हो रहा है।

2.**सुब्बा, दीप्ति (2014)** ने **'शिक्षण में लोकतांत्रिक मूल्य और लोकतांत्रिक उपागम: एक दृष्टिकोण'** के अध्ययन में पाया कि भावी पीढ़ी के आर्किटेक्ट के रूप में युवा मन को जोड़ कर राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

3.**ओझा, प्रभात कुमार** एवं **अहमद, तौफीक (2016)** ने **'भारतीय लोकतंत्रः उपलब्धियां तथा चुनौतियां एक विश्लेषण'** विषय पर शोध कार्य किया और पाया कि भारतीय लोकतंत्र एक प्रगतिशील एवं जीवंत लोकतंत्र के रूप में उभर कर सामने आया है।भारतीय लोकतंत्र अपनी प्रगतिशीलता और जीवंतता के सहारे तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए अपना रास्ता स्वयं तय करेगा।

4.**सलाग्रे, एम0बी0 (2017)** ने **'लोकतांत्रिक मूल्य: डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विचार एवं दृष्टिकोंण'** के अध्ययन में पाया कि अम्बेडकर यह मानते थे कि राज्य को लोकतांत्रिक राजनीति के आधार पर राजनीतिक लोकतंत्र के साथ-साथ आर्थिक लोकतंत्र के साथ समाज का पुनर्निर्माण करना होगा।

अध्ययन का सीमांकन - प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्र-छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन तक ही सीमित है।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि की सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या - प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में रायबरेली जनपद के अन्तर्गत उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत समस्त छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन का न्यादर्श एवं न्यादर्शन तकनीक - प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायबरेली जनपद में उच्च प्राथमिक स्तर पर संचालित समस्त विद्यालयों में से 4 विद्यालयों (2 ग्रामीण व 2 शहरी) का चयन सरल यादृच्छिक विधि द्वारा करते हुए उनमें अध्ययनरत 80 विद्यार्थियों (40 ग्रामीण- 20 छात्र व 20 छात्राओं एवं 40 शहरी- 20 छात्र व 20 छात्राओं) को सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण - प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए **श्री बेनुधर चिनारा** तथा **दीप्ति सुभा** द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत **लोकतांत्रिक मूल्य मापनी** का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, टी-अनुपात आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण-

- **प्रथम परिकल्पना का सत्यापन-**

H_{01}- " उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है"

तालिका सं0 -1

ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य तुलना हेतु तालिका

क्र0 सं0	समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-अनुपात (t-ratio)	मुक्तांश (df)	सार्थकता स्तर	टिप्पणी
1.	ग्रामीण छात्र	20	40.95	5.72	1.83	0.49	38	.05 पर t का सारणी मान = 2.02	असार्थक
2.	ग्रामीण छात्राएँ	20	41.85	5.57				.01 पर t का सारणी मान = 2.71	

सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त मानों को उपरोक्त तालिका सं01 में दर्शाया गया है जिसके अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों का मध्यमान (M) क्रमशः 40.95 एवं 41.85 है तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 5.72 एवं 5.57 है। इनके मध्य की मानक त्रुटि (σ_D) 1.83 है, जिसके आधार पर परिगणित टी-अनुपात (t-ratio) का मान 0.49 है, जो मुक्तांश (df) 38 पर सार्थकता स्तर .05 और .01 पर टी-अनुपात के दिये गये सारणी मान क्रमशः 2.02 एवं 2.71 से कम है। इसलिए उच्च प्राथमिक स्तर

पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

- **द्वितीय परिकल्पना का सत्यापन -**

H_{02} -"उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है"

तालिका सं0 -2

शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य तुलना हेतु तालिका

क्र0 सं0	समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-अनुपात (t-ratio)	मुक्तांश (df)	सार्थकता स्तर	टिप्पणी
1.	ग्रामीण छात्र	20	41.80	4.22	1.56	1.15	38	.05 पर t का सारणी मान = 2.02	असार्थक
2.	शहरी छात्राएँ	20	43.60	3.45				.01 पर t का सारणी मान = 2.71	

सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त मानों को उपरोक्त तालिका सं0 2 में दर्शाया गया है जिसके अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों का मध्यमान (M) क्रमशः 41.80 एवं 43.60 है तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 4.22 एवं 3.45 है। इनके मध्य की मानक त्रुटि (σ_D)

1.56 है, जिसके आधार पर परिगणित टी-अनुपात (t-ratio) का मान 1.15 है, जो मुक्तांश (df) 38 पर सार्थकता स्तर .05 और .01 पर टी-अनुपात के दिये गये सारणी मान क्रमशः 2.02 एवं 2.71 से कम है। इसलिए उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

- **तृतीय परिकल्पना का सत्यापन-**

H_{03} - "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका सं0 -3

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्योंके मध्य तुलना हेतु तालिका

क्र0 सं0	समूह	न्यादर्श का आकार (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-अनुपात (t-ratio)	मुक्तांश (df)	सार्थकता स्तर	टिप्पणी
1.	ग्रामीण विद्यार्थी	40	41.40	3.96	1.13	1.15	78	.05 पर t का सारणी मान = 1.99	असार्थक
2.	शहरी विद्यार्थी	40	42.70	5.87				.01 पर t का सारणी मान = 2.64	

सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त मानों को उपरोक्त तालिका सं0 3 में दर्शाया गया है जिसके अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का मध्यमान (M) क्रमशः 41.40 एवं 42.70 है तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 3.96 एवं 5.87 है। इनके मध्य की मानक त्रुटि (σ_D) 1.13 है, जिसके आधार पर परिगणित टी-अनुपात (t-ratio) का मान 1.15 है, जो मुक्तांश (df) 78 पर सार्थकता स्तर .05 और .01 पर टी-अनुपात के दिये गये सारणी मान क्रमशः 1.99 एवं 2.64 से कम है। इसलिए उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य अन्तर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिणाम एवं निष्कर्ष -

शोधार्थी द्वारा परिकल्पनाओं के सत्यापन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं-

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई अंतर नहीं है।

2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई अंतर नहीं है।

3. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य कोई अंतर नहीं है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है छात्र एवं छात्राएँ, शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही परिवेशों में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति पर्याप्त जागरूक हैं और इसका कारण उनके परिवार, समाज व विद्यालय का परिवेश और वहाँ उन्हें दी जाने वाली मूल्य शिक्षा है।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता - प्रस्तुत शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष इस ओर इंगित करते हैं कि यदि बालकों को लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूक पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश प्राप्त हो तो उनमें मूल्यों का विकास और भी बेहतर रूप से हो सकता है। लोकतान्त्रिक मूल्यों की शिक्षा नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को प्रोत्साहित करती है, जिससे छात्रों को ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है जो सभी के हितों और आदर्शों के साथ मेल खाता हो। लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से समाज में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की समझ को बढ़ावा मिलता है, जो समरसता की भावना को प्रोत्साहित करता है । इस शोध से यह भी पता चलता है कि लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव डालकर उन्हें समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायता करेगी। इसलिए यह शोध इन लोकतान्त्रिक मूल्यों की शिक्षा पर विशेष ध्यान आकृष्ट किये जाने की आवश्यकता पर बल देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1.अस्थाना, डॉ0 विपिन (1999). *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन.* विनोद पुस्तक मंदिर. आगरा. उत्तर प्रदेश।

2.गुप्ता, एस0पी0 (2015). *अनुसंधान संदर्शिका.* शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद. उत्तर प्रदेश।

3.लाल, रमन बिहारी (2016). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत.* रस्तोगी पब्लिकेशन. मेरठ. उत्तर प्रदेश।

4.माथुर, एस0 एस0 (1993). *शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर.* आगरा. उत्तर प्रदेश।

5.राय, सी0 पी0 (2011). *अनुसंधान परिचय.* विनोद पुस्तक मन्दिर. आगरा. उत्तर प्रदेश।

6.वर्मा, ओम प्रकाश (2012). *समाजशास्त्र ग्रन्थम.* कानुपर. उत्तर प्रदेश।

सर्वे-

7. कुमार, मनीष (2004). '*उज्बेकिस्तान में लोकतंत्र एवं मानवाधिकार*'. शोध – प्रबंध. जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय. नई

दिल्ली. https://shodhganga.inflibnet.ac.in, 16-12-2020, 6:40 P.M.

8. ओझा, प्रभात कुमार एवं अहमद, तौफीक (2016).'*भारतीय लोकतंत्रः उपलब्धियां तथा चुनौतियां एक विश्लेषण*'. शोध पत्र.

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट. वॉल्यूम:3, इश्यू:5, मई-2016.

www.allsubjectjournal.com, 18/09/2024, 04:19pm.

9. सलाग्रे, एम0बी0 (2017).'*लोकतांत्रिक मूल्य: डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विचार एवं दृष्टिकोंण*'.

https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3053792.

10. सुब्बा, दीप्ति (2014). '*शिक्षण में लोकतांत्रिक मूल्य और लोकतांत्रिक उपागम :एक दृष्टिकोण*'. शोध पत्र. *अमेरिकन जर्नल ऑफ*

एजुकेशनल रिसर्च. वॉल्यूम:2, इश्यू:12A, दिसंबर-2014.

वेबसाइट्स -

11. https://hi.m.wikipedia.org .

12. www.shodhganga.inflibnet.ac.in .